नंदा देवी राजजात 2000

(एक अनोखा अनुभव)

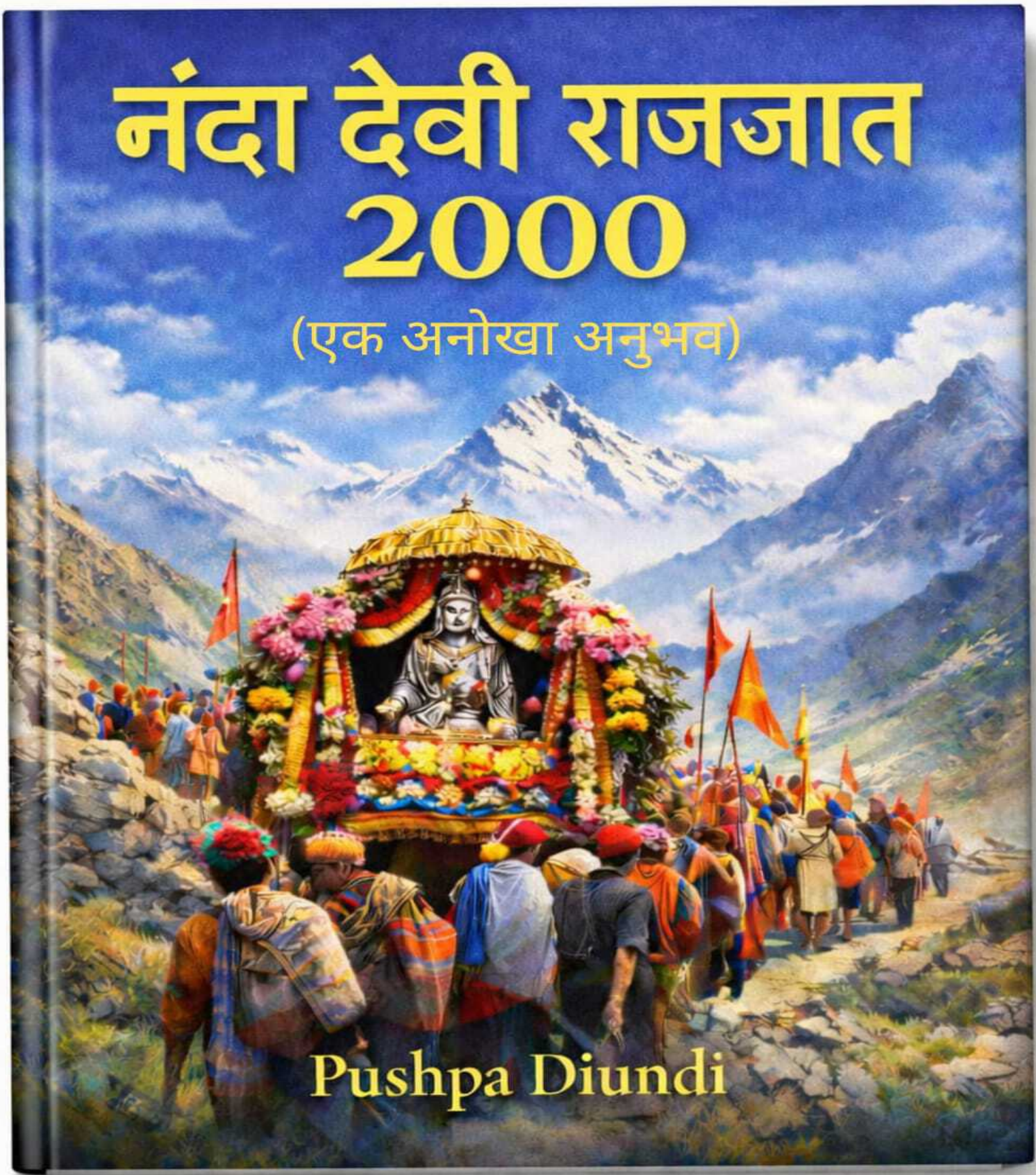

Pushpa Diundi

भूमिका / प्रस्तावना

“नंदा देवी राजजात 2000”
(एक अनोखा अनुभव)

माँ नंदा देवी की पावन राजजात यात्रा केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि आस्था, तप, त्याग, विश्वास और आत्मिक अनुभूति का ऐसा दिव्य संगम है, जो मानव जीवन को भीतर से परिवर्तित कर देता है। हिमालय की दुर्गम पर्वत श्रेणियों, घने वनों, कठिन और जोखिमपूर्ण मार्गों से होकर गुजरने वाली यह यात्रा श्रद्धालु की केवल शारीरिक परीक्षा नहीं लेती, बल्कि उसके धैर्य, साहस, विश्वास और समर्पण को भी परखती है। प्रत्येक कदम पर माँ की उपस्थिति का अनुभव होता है और यही अनुभव इस यात्रा को साधारण से असाधारण बना देता है।

यह पुस्तक मेरे स्वयं के प्रत्यक्ष अनुभवों का वर्णन नहीं है। यह मेरे पूज्य पति स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद डियूंडी जी के जीवन के एक अत्यंत महत्वपूर्ण, दुर्लभ और आध्यात्मिक अनुभव का संकलन है। उन्होंने अपने संपूर्ण जीवनकाल में केवल एक बार, वर्ष 2000 में, माँ नंदा देवी की राजजात यात्रा में भाग लिया था। यह यात्रा उनके लिए मात्र एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं थी, बल्कि उनके जीवन को दिशा देने वाला, आत्मा को स्पर्श करने वाला और विचारों को परिवर्तित कर देने वाला एक गहन आध्यात्मिक अनुभव सिद्ध हुई।

राजजात यात्रा के दौरान उन्होंने जो कुछ देखा, अनुभव किया और महसूस किया—उस प्रत्येक क्षण, प्रत्येक दृश्य और प्रत्येक भाव को उन्होंने अत्यंत श्रद्धा, सच्चाई और संवेदनशीलता के साथ अपनी निजी डायरी में अंकित किया। समय के साथ यह डायरी केवल व्यक्तिगत स्मृतियों का संग्रह नहीं रही, बल्कि माँ नंदा देवी की कृपा से प्राप्त एक अमूल्य आध्यात्मिक धरोहर बन गई। उसी धरोहर को सहेजकर, यथासंभव उसी भाव, सत्य और सरलता के साथ, पुस्तक का स्वरूप देने का यह मेरा विनम्र प्रयास है।

इस पुस्तक के लेखन अथवा संकलन के पीछे मेरी कोई साहित्यिक विद्वता, लेखकीय दावा या बौद्धिक दंभ नहीं है। मैं स्वयं को केवल एक माध्यम मानती हूँ। यदि मुझे इस कार्य को पूर्ण करने की प्रेरणा और सामर्थ्य प्राप्त हुई, तो वह पूर्णतः माँ नंदा देवी, माँ कालिंका देवी तथा पितृ देवताओं की कृपा का परिणाम है। यह पुस्तक मेरे लिए लेखन का कार्य नहीं, बल्कि श्रद्धा, स्मृति और समर्पण का भावात्मक दायित्व रही है।

मैं अपने सभी पाठकों से विनम्र निवेदन करती हूँ कि इस पुस्तक में वर्णित अनुभव एक भक्त के निजी अनुभव हैं। आध्यात्मिक यात्राओं में प्रत्येक व्यक्ति की अनुभूति, दृष्टि और भाव अलग-अलग हो सकते हैं। अतः इन अनुभवों के आधार पर किसी भी मान्यता, परंपरा या भावना को सही अथवा गलत ठहराने का कोई उद्देश्य नहीं है। इस पुस्तक का उद्देश्य केवल अनुभव को साझा करना है—न कि कोई निष्कर्ष थोपना।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक के पठन से पाठकों की माँ नंदा देवी के प्रति श्रद्धा, समझ

और भावनात्मक जुड़ाव और अधिक गहरा होगा। यह पुस्तक केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि एक भक्त के हृदय में बसे विश्वास, भय, साहस, संघर्ष और पूर्ण समर्पण की जीवंत कथा है।

मैं यह पुस्तक पूर्ण रूप से माँ नंदा देवी को, अपने पूज्य पति स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद डियूंडी जी को, तथा उन सभी दृश्य-अदृश्य शक्तियों को समर्पित करती हूँ, जिनकी कृपा से यह कार्य संभव हो सका। इस पुस्तक में यदि कहीं कोई त्रुटि, अशुद्धि अथवा सुधार की आवश्यकता प्रतीत हो, तो पाठक उसे मेरी सीमित सामर्थ्य और अल्प बुद्धि की सीमा समझकर क्षम्य मानेंगे—ऐसी प्रार्थना है।

अंत में, मैं माँ नंदा देवी से करबद्ध प्रार्थना करती हूँ कि वे इस पुस्तक के प्रत्येक पाठक पर अपनी कृपा बनाए रखें, उन्हें सद्बुद्धि, शांति और श्रद्धा के मार्ग पर अग्रसर करें तथा सभी की मनोकामनाएँ पूर्ण करें।

पुष्पा डियूंडी

(स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद डियूंडी जी की धर्मपत्नी)

नन्दा देवी राजजात 2000

(एक अनोखा अनुभव)

नन्दा देवी राजजात के प्रमुख पड़ाव

नन्दा देवी राजजात केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं, बल्कि उत्तराखण्ड की लोकसंस्कृति, परंपरा, आस्था और प्रकृति से जुड़ा हुआ एक अद्वितीय महोत्सव है। यह यात्रा सदियों से चली आ रही उस परंपरा का प्रतीक है, जिसमें माँ नन्दा को उनके मायके से ससुराल की ओर विदा किया जाता है। यह कठिन, लंबी और भावनात्मक यात्रा श्रद्धालुओं के धैर्य, विश्वास और समर्पण की सच्ची परीक्षा होती है।

वर्ष 2000 में सम्पन्न हुई नन्दा देवी राजजात ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रही। इस राजजात में हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया और माँ नन्दा के जयकारों से सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्र गुंजायमान हो उठा। यह यात्रा विभिन्न गाँवों, पर्वतीय पड़ावों, घने वनों, ऊँचे बुग्यालों और दुर्गम दर्रों से होकर गुजरती है। प्रत्येक पड़ाव का अपना धार्मिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व है।

निम्नलिखित पड़ाव इस पावन यात्रा के मुख्य चरण रहे हैं—

1. नौटी

नौटी गाँव नन्दा देवी राजजात का प्रारंभिक और अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल है। यही से माँ नन्दा की राजजात विधिवत रूप से आरंभ होती है। इस स्थान पर विशेष पूजा-अर्चना, अनुष्ठान और पारंपरिक विधियाँ सम्पन्न की जाती हैं। श्रद्धालुओं के लिए यह स्थल आस्था और उल्लास का केंद्र होता है।

2. ईडाबधाण

ईडाबधाण एक शांत एवं आध्यात्मिक वातावरण वाला पड़ाव है। यहाँ पहुँचते ही यात्रियों को पर्वतीय जीवन की सरलता और पवित्रता का अनुभव होता है। यह स्थान यात्रा की थकान को कुछ क्षणों के लिए विस्मृत कर देता है।

3. पुनः नौटी

यात्रा के क्रम में पुनः नौटी लौटना परंपरा का हिस्सा है, जो यात्रा की निरंतरता और धार्मिक अनुशासन को दर्शाता है।

4. कांसुवा

कांसुवा पड़ाव प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक भावनाओं का सुंदर संगम है। यहाँ से यात्रा धीरे-धीरे कठिन मार्गों की ओर अग्रसर होती है।

5. सेम

सेम क्षेत्र अपनी धार्मिक मान्यताओं और लोकविश्वासों के लिए जाना जाता है। यहाँ श्रद्धालु माँ नन्दा से सकुशल यात्रा की प्रार्थना करते हैं।

6. कोटी

कोटी पड़ाव पर पहुँचते-पहुँचते यात्रियों में सामूहिकता और आपसी सहयोग की भावना और प्रबल हो जाती है। यह स्थान यात्रा के अनुशासन का प्रतीक है।

7. भगोती

भगोती गाँव में स्थानीय जनमानस श्रद्धालुओं का पारंपरिक स्वागत करता है। यहाँ लोकगीत, लोकसंस्कृति और श्रद्धा का अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है।

8. कुलसारी

कुलसारी पड़ाव यात्रा में विश्राम और आत्मचिंतन का अवसर प्रदान करता है। यहाँ की प्राकृतिक शांति मन को गहराई से छूती है।

9. चोपडियू

चोपडियू मार्ग अपेक्षाकृत कठिन होता है, जहाँ श्रद्धालुओं की आस्था उनकी सबसे बड़ी शक्ति बनती है।

10. नंदकेशरी

नंदकेशरी धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ विशेष पूजा-अर्चना के साथ यात्रा आगे बढ़ती है।

11. फल्दियागांव

फल्दियागांव में स्थानीय लोग राजजात को अपने जीवन का सौभाग्य मानते हैं और पूरे श्रद्धाभाव से सेवा करते हैं।

12. मुंदोली

मुंदोली से आगे यात्रा का मार्ग और अधिक दुर्गम हो जाता है। यहाँ से हिमालय की भव्यता स्पष्ट रूप से अनुभव की जा सकती है।

13. वाण

वाण गाँव राजजात का एक प्रमुख पड़ाव है। यहाँ से बुग्यालों की ओर यात्रा प्रारंभ होती है और वातावरण में आध्यात्मिक गंभीरता बढ़ जाती है।

14. गरोलीपातल

गरोलीपातल एक ऊँचाई वाला स्थल है, जहाँ ठंडी हवाएँ और खुला आकाश श्रद्धालुओं को

अलौकिक अनुभूति कराते हैं।

15. वेदनी

वेदनी बुग्याल यात्रा का सबसे मनोहारी और आध्यात्मिक स्थल माना जाता है। यहाँ की हरियाली, झील और शांति श्रद्धालुओं के हृदय में स्थायी छाप छोड़ देती है।

16. पातरनचौणिया

यह पड़ाव साहस और श्रद्धा की परीक्षा का प्रतीक है। यहाँ पहुँचकर श्रद्धालु माँ नन्दा के प्रति पूर्ण समर्पण का अनुभव करते हैं।

17. शिलासमुद्र

शिलासमुद्र को राजजात का अत्यंत पवित्र स्थल माना जाता है। यहाँ धार्मिक मान्यताओं के अनुसार विशेष अनुभूतियाँ होती हैं।

18. चन्दनियाघाट

चन्दनियाघाट पर पहुँचते ही यात्रा अपने चरम आध्यात्मिक स्तर पर पहुँच जाती है। यह स्थान गहन भावनाओं से भरा होता है।

19. सुतोल

सुतोल पड़ाव पर श्रद्धालुओं में एक अलग ही शांति और संतोष का भाव दिखाई देता है। यहाँ यात्रा अपने समापन की ओर बढ़ती है।

20. आगमनघाट

आगमनघाट राजजात का अंतिम प्रमुख पड़ाव है। यहाँ यात्रा का औपचारिक समापन होता है, लेकिन श्रद्धालुओं के हृदय में यह अनुभव जीवन भर के लिए अंकित हो जाता है।

लादूं देवता मन्दिर

उत्तराखण्ड प्राचीन काल से ही देवी-देवताओं की पुण्यभूमि तथा ऋषि-मुनियों की तपस्थली रहा है। यही कारण है कि यहाँ की संस्कृति, परंपराओं और जनमानस में आध्यात्मिकता की गहरी छाप स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उत्तराखण्ड के निवासी अपने देवी-देवताओं को केवल आराध्य नहीं, बल्कि अपने परिवार का अभिन्न अंग मानते हैं। कोई उन्हें घर की बेटी के रूप में पूजता है, कोई पुत्र, कोई बहू और कोई जामाता (जवाई) के रूप में। इसी पारिवारिक भाव, आत्मीयता और अटूट विश्वास की नींव पर आधारित है — *नन्दा देवी राजजात*।

नन्दा देवी राजजात को उत्तराखण्ड का महाकुंभ भी कहा जाता है। यह यात्रा केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक एकता का भी महान उत्सव है। माँ नन्दा देवी को उत्तराखण्ड के दोनों मंडलों — गढ़वाल और कुमाऊँ — में समान श्रद्धा और सम्मान के साथ पूजा जाता है। उनके भक्त विभिन्न कालखंडों में नन्दा देवी की जात का आयोजन करते हैं, जिनमें वार्षिक जात, त्रैवार्षिक जात, अर्धकुंभी जात तथा महाकुंभी जात सम्मिलित हैं।

यहाँ “जात” शब्द का अर्थ उस परंपरा से है, जिसमें देवी-देवताओं के आदेशानुसार उनका क्षेत्र-भ्रमण कराया जाता है। लोकमान्यता के अनुसार यह आदेश देवी या देवता अपने किसी भक्त पर अवतरित होकर देते हैं। इस जात का उद्देश्य होता है कि देवी-देवता अपने भक्तों से मिलें, उनकी व्यथाएँ जानें और उन्हें आशीर्वाद प्रदान करें।

इन्हीं पावन परंपराओं में एक अत्यंत विशिष्ट और दिव्य यात्रा है — *नन्दा देवी राजजात। मान्यता है कि माँ नन्दा देवी हिमालय की पुत्री हैं, पार्वती का ही स्वरूप हैं, जिनका विवाह कैलाशवासी भगवान शिव से हुआ है। उत्तराखण्ड के प्राचीन राजाओं की कुलदेवी होने के कारण इस जात का आयोजन राजा द्वारा किया जाता था, इसलिए इसे राजजात कहा गया। वर्तमान समय में इस यात्रा का संचालन उत्तराखण्ड सरकार द्वारा किया जाता है, तथा राजवंश द्वारा परंपरानुसार पूजा-अर्चना के पश्चात राजजात का शुभारम्भ होता है।

उत्तराखण्ड के जनमानस में नन्दा देवी राजजात को बेटी को मायके से ससुराल विदा करने के भाव से देखा जाता है। मान्यता है कि माँ नन्दा देवी बारह वर्षों तक कैलाश में निवास करने के पश्चात अपने मायके को स्मरण करती हैं और अपने मायके पक्ष को संदेश भेजती हैं। इस संदेश का प्रतीक माना जाता है — चोसिंगे खाडू, अर्थात चार सींगों वाला भेड़। जिस क्षेत्र में इस खाडू का जन्म होता है, वहीं से राजजात की तैयारियाँ प्रारंभ हो जाती हैं।

(नोट: वर्तमान मान्यता के अनुसार चोसिंगे खाडू का जन्म राजजात के छठे पड़ाव — कोटी — में हुआ है, अतः वर्ष 2026 के लिए नन्दा देवी राजजात की तैयारियाँ आरंभ हो चुकी हैं।)

यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि यह पुस्तक मेरे स्वयं के अनुभवों का वर्णन नहीं है। यह मेरे पूज्य पति स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद डियूंडी जी के उन अनुभवों का संकलन है, जो उन्होंने वर्ष 2000 में माँ नन्दा देवी की राजजात यात्रा के दौरान प्राप्त किए। उन्होंने इस पावन यात्रा के प्रत्येक दृश्य, अनुभूति और भाव को अत्यंत श्रद्धा के साथ अपनी निजी डायरी में संजोकर रखा था। समय के साथ वह डायरी केवल स्मृतियों का संग्रह नहीं रही, बल्कि मेरे लिए एक पवित्र धरोहर बन गई।

आज उसी धरोहर को, यथासंभव उसी सत्य, भाव और श्रद्धा के साथ, मैं पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ। अतः पाठकों का अधिक समय न लेते हुए, अब मैं इस दिव्य यात्रा का क्रमबद्ध और तथ्यपरक वर्णन प्रस्तुत करती हूँ

नन्दा देवी राजजात यात्रा में कुल 20 प्रमुख पड़ाव होते हैं। यह यात्रा लगभग 280 किलोमीटर की होती है। वर्ष 2000 में श्री नन्दा देवी राजजात का शुभारम्भ दिनांक 21 अगस्त 2000, सोमवार (भाद्र मास) को हुआ।

इस दिन कांसुवा गाँव के राजवंशी कुंवरों द्वारा चोसिंगे खाडू, पवित्र रिंगाल, राजछतोली तथा स्वर्ण प्रतिमा को लेकर यंत्र सिद्धपीठ नन्दा देवी, नौटी पहुँचाया गया। इन्हें विधिवत रूप से राजगुरुओं को सौंपा गया। अगले दिन, 22 अगस्त 2000 को, यह पावन यात्रा कैलाश की दिशा में अग्रसर हुई।

नन्दा देवी राजजात का प्रारम्भिक स्थल नौटी है, जहाँ माँ नन्दा देवी का यंत्र सिद्धपीठ मंदिर स्थित है। इस मंदिर के मुख्य पुजारी नौटियाल ब्राह्मण होते हैं, जिन्हें प्राचीन काल से राजाओं के मुख्य पुरोहित होने के कारण राजगुरु की उपाधि प्राप्त है। नौटी में नौटियाल ब्राह्मण विधि-विधान से कुंवरों द्वारा लाई गई स्वर्ण प्रतिमा को राजछतोली में स्थापित करते हैं।

राजकुंवर भी यहाँ अपनी-अपनी भेंट माता को अर्पित करते हैं। इसके पश्चात राजछतोली तथा चोसिंगे खाडू की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है और माँ नन्दा देवी से यात्रा के निर्विघ्न, सफल और मंगलमय होने की प्रार्थना की जाती है।

नन्दा देवी राजजात में चोसिंगे खाडू का अत्यंत विशेष महत्व होता है। ग्रामवासी अपनी श्रद्धा अनुसार साड़ी, खाद्य सामग्री, धनराशि, श्रृंगार सामग्री आदि भेंट स्वरूप खाडू की पीठ पर बाँधे गए वस्त्र में रखते हैं, ताकि वह इन भेंटों को कैलाश तक माँ नन्दा देवी के लिए पहुँचा सके। यह परंपरा उसी प्रकार है, जैसे मायके वाले अपनी विवाहित बेटी को कुछ देकर विदा करते हैं।

नौटी में अन्य गाँवों से भी अपने-अपने देवी-देवताओं की छतोली नन्दा देवी राजजात में सम्मिलित होने के लिए लाई जाती है। इस यात्रा में गोलाकार छतोलीयाँ माँ नन्दा देवी के ससुराल पक्ष की मानी जाती हैं, जबकि चौकोर छतोलीयाँ मायके पक्ष की। छतोली को धारण करने वाला व्यक्ति संपूर्ण यात्रा नंगे पाँव, पूर्ण संयम, श्रद्धा और नियमों के साथ करता है।

नौटी में विधिवत पूजा-अर्चना सम्पन्न होने के पश्चात दिनांक *22 अगस्त 2000* को नन्दा देवी राजजात यात्रा अपने अगले पड़ाव *ईडाबधाण* के लिए प्रस्थान करती है। ईडाबधाण से जुड़ी एक अत्यंत प्रचलित और श्रद्धापूर्ण किवदंती लोकमानस में गहराई से रची-बसी है। कहा जाता है कि एक बार जब माँ नन्दा देवी अपने मायके से कैलाश स्थित ससुराल की ओर प्रस्थान कर रही थीं, तभी उनकी दृष्टि ईडाबधाण गाँव पर पड़ी। गाँव की भौगोलिक सुंदरता और वातावरण उन्हें अत्यंत प्रिय लगा और वे वहाँ ठहर गईं।

उस समय ईडाबधाण गाँव में जमन सिंह जधोणा नामक एक परम श्रद्धालु निवास करता था। उसने पूर्ण भाव, आदर और समर्पण के साथ माँ नन्दा देवी का आतिथ्य-सत्कार किया। उसकी सेवा और श्रद्धा से प्रसन्न होकर माँ नन्दा देवी ने उसे आशीर्वाद दिया। जमन सिंह जधोणा ने विनम्र प्रार्थना की कि जब-जब आप कैलाश की ओर जाएँ, तब-तब मेरे गाँव में अवश्य पधारें। तभी से ईडाबधाण, नन्दा देवी राजजात का एक अनिवार्य पड़ाव माना जाने लगा।

ईडाबधाण में विश्राम के पश्चात, यात्रा अगले दिन अर्थात *23 अगस्त 2000* को पुनः नौटी लौटती है। उसी रात्रि नौटी में माँ नन्दा देवी का भव्य जागरण आयोजित किया जाता है, जिसमें क्षेत्र के श्रद्धालु पूरी रात भजन-कीर्तन और पूजा-अर्चना में लीन रहते हैं।

दिनांक *24 अगस्त 2000* को नन्दा देवी राजजात यात्रा नौटी से *कांसुवा गाँव* के लिए प्रस्थान करती है। मार्ग में देवल, नैणी, मलेठी, नौना आदि गाँवों की छतोलीयों का मिलन होता है। इस दिन यात्रा का रात्रि विश्राम कांसुवा गाँव में निर्धारित रहता है।

इसी दिन नन्दा देवी की मूर्ति सिद्धपीठ *देऊ-से-कोटी* से छड़ी-चाकर तथा अन्य भारी सामग्री के साथ प्रस्थान करती है। वहीं ग्राम *ग्वालखेत* से डियूंडी ब्राह्मण शंख-घंटी बजाते हुए कांसुवा की ओर अग्रसर होते हैं। कांसुवा के ग्रामीण ढोल-दमाऊ की गूंज के साथ मार्ग में ही उनका स्वागत करने आते हैं। पूरे गाँव में उत्सव का वातावरण छा जाता है और रात्रि विश्राम कांसुवा में ही सम्पन्न होता है।

दिनांक 25 अगस्त 2000** को नन्दा देवी राजजात यात्रा कांसुवा से आगे की ओर प्रस्थान करती है। मार्ग में महादेव घाट, जिसे माधोघाट के नाम से भी जाना जाता है, आता है। यह स्थल राजजात की परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहीं एक विशेष और अनिवार्य

धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न होता है।

माधोघाट पर राजगुरु नौटियाल ब्राह्मण विधिवत रूप से राजछतोली को श्री राजराजेश्वरी नन्दा देवी के परंपरागत पुजारी डियूंडी ब्राह्मणों को सौंपते हैं। इसी क्षण से कैलाश तक राजछतोली को ले जाने का पावन दायित्व डियूंडी ब्राह्मणों पर आ जाता है। यह केवल एक धार्मिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही आस्था, मर्यादा और विश्वास की परंपरा का निर्वहन है।

इसी महादेव घाट पर मेरे पूज्य पति स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद डियूंडी जी भी नन्दा देवी राजजात यात्रा में सम्मिलित हुए। अतः इस बिंदु से यह यात्रा-वृत्तांत केवल एक सामूहिक यात्रा का वर्णन न रहकर, उनके व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं का साक्ष्य भी बन जाता है। आगे के कुछ प्रसंगों में यह वर्णन उनके शब्दों और अनुभूतियों के माध्यम से भी आगे बढ़ेगा—पाठकों से इसे उसी भावभूमि में ग्रहण करने का विनम्र निवेदन है।

24 अगस्त 2000 की रात्रि को हमारी कुलदेवी माँ कालिंका ने अपने पशुवा पर अवतरित होकर संकेत दिया कि इस बार राजछतोली को लेकर विवाद उत्पन्न हो सकता है और परिस्थितियाँ गंभीर रूप ले सकती हैं। देवी ने यह भी स्पष्ट किया कि यदि इस कार्य में घोड़ा—अर्थात मेरे पूज्य पति स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद डियूंडी जी—सम्मिलित होंगे, तभी स्थिति संतुलित रह पाएगी और यात्रा निर्विघ्न आगे बढ़ सकेगी।

अगले दिन प्रातः 25 अगस्त 2000 को नित्यकर्म से निवृत्त होकर मेरे पतिदेव, मेरे भाई के साथ प्रातः लगभग आठ बजे माधोघाट के लिए प्रस्थान कर गए। यह प्रस्थान केवल एक यात्रा का आरंभ नहीं था, बल्कि दायित्व, आस्था और देवी के संकेतों पर अटूट विश्वास का जीवंत प्रमाण था। उन्हें उस स्थान का पूर्ण ज्ञान नहीं था, फिर भी पूछते-पाछते मात्र तीन घंटों में वे वहाँ पहुँच गए।

माधोघाट में सभी डियूंडी बंधु एकत्रित थे। जैसे ही छतोलीयाँ पहुँचीं, राजछतोली को ग्रहण करने हेतु भीड़ उमड़ पड़ी और क्षणभर में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। इसके पश्चात देव-परीक्षा आरंभ हुई। कई व्यक्तियों पर देवता आए; यहाँ तक कि मेरे देवर पर भी तीन बार देवता आए और मोती दिए गए, किंतु सभी प्रयास निष्फल रहे।

तभी माँ कालिंका स्वयं अपने पशुवा पर प्रकट हुईं और ऐसी परीक्षा दी कि उपस्थित जनसमूह अचंभित रह गया। यह परीक्षा प्रसिद्ध तांत्रिक *श्री कोठियाल जी* द्वारा ली गई। जिस पर भी देवता आते, वे उसके सिर पर चावल रखकर हाथ रखते और देवता को शांत कर देते। पहले लोमुडू का वीर तथा लोमुडू (भैरव देवता) भी प्रकट हुए, किंतु उन्हें भी रोक दिया गया। अंततः माँ कालिंका ने उनके सुवहाने स्वप्न चुर कर दिए।

(स्वप्न का अभिप्राय यह है कि उन्हें पूर्व से ज्ञात था कि डियूंडी बंधु सफल नहीं होंगे और राजछतोली उनके पास आएगी; किंतु माँ कालिंका की कृपा से ऐसा नहीं हो सका। स्वयं उनके मुख से यह स्वीकारोक्ति निकली कि यह देवी काफी दिन से पूजा नहीं हुई यदि इस देवी की पूजा हुई होती, तो उनके लिए स्थिति अत्यंत कठिन हो जाती।)

माँ कालिंका द्वारा दी गई परीक्षा को तांत्रिक श्री कोठियाल जी ने सभी के समक्ष प्रमाणित किया और अंततः राजछतोली मेरे देवर को सौंप दी गई। इसके पश्चात यात्रा पुनः आगे बढ़ी।

महादेव घाट के बाद राजछतोली की भेंट डियूंडी ब्राह्मणों के पास रहती है, जबकि चौंसिंगे खाडू की भेंट राजगुरु नौटियाल ब्राह्मणों के पास। क्रमशः आगे बढ़ते हुए राजजात *चाँदपुरगढ़ी* पहुँची। सर्वप्रथम धार पर स्थित नन्दा मंदिर में पूजा हुई, तत्पश्चात सड़क के समीप स्थित कालिंका मंदिर में दर्शन किए गए।

महादेव घाट से चाँदपुरगढ़ी तक विशाल जनसमूह उमड़ा हुआ था। अनुमानतः यह संख्या लगभग 75,000 थी, जबकि विभिन्न समाचार पत्रों में इसे लगभग 50,000 बताया गया। पूर्वकाल में चाँदपुरगढ़ी में राजा स्वयं अपने परिवार सहित पूजा करते थे; किंतु पिछले दो अवसरों से राजा उपस्थित नहीं हुए। उनके स्थान पर कांसुवा गाँव में निवास करने वाले उनके छोटे भाई द्वारा पूजा सम्पन्न कराई गई।

चाँदपुरगढ़ी से आगे यात्रा निरंतर बढ़ती रही। मार्ग में पड़ने वाले गाँवों के लोग श्रद्धा और उत्साह के साथ राजजात का स्वागत करते रहे तथा चौंसिंगे खाडू और राजछतोली को भेंट अर्पित करते रहे। इसी क्रम में यात्रा तोप गाँव स्थित गोरजा माई मंदिर पहुँची। वहाँ पूजा-अर्चना के पश्चात रात्रि विश्राम के लिए सेम गाँव में ठहराव हुआ।

सेम गाँव में सेम, चमोला, गैरोली आदि गाँवों की छतोलीयाँ भी राजछतोली के साथ सम्मिलित हो गईं। पूरी रात पूजा-जागरण चला और ग्रामीणों ने यात्रियों व छतोली धारकों के भोजन-आवास की संपूर्ण व्यवस्था की।

दिनांक *26 अगस्त 2000* को नन्दा देवी राजजात यात्रा सेम गाँव से *कोटी गाँव* के लिए प्रस्थान करती है। सेम से धारकोट तक का मार्ग अत्यंत कठिन और चढ़ाई से भरा हुआ है, किंतु माँ नन्दा देवी के भक्त “जय माता दी” और “जय राजराजेश्वरी नन्दा देवी” के उद्घोष करते हुए पूरे मार्ग में ऐसा उत्साह भर देते हैं कि कठिनाइयों का आभास तक नहीं होता।

धारकोट से धनयाल होते हुए यात्रा सिनतौली पहुँचती है और वहाँ से दुलखेणी धार की

ओर पुनः चढ़ाई आरंभ होती है। जब यहाँ छतोली पहुँचती है, तो सामने *नौटी गाँव* स्पष्ट दिखाई देता है। नौटी को देखते ही लोकमान्यता है कि माँ नन्दा देवी अपने मायके की स्मृति में भावुक हो उठती हैं और मानो लौटने को आतुर हो जाती हैं—ठीक उसी प्रकार जैसे विवाहोपरांत विदा होती बेटी को मायके की याद आ जाती है।

जिस प्रकार विवाह के समय बेटी बार-बार प्रयास करती है कि उसे अपने मायके से दूर न भेजा जाए, कि वह यहीं अपने माता-पिता और परिजनों के बीच बनी रहे—परंतु भीतर ही भीतर यह भी जानती है कि यह संभव नहीं—उसी द्वंद, उसी पीड़ा और उसी भावावेग को वह अपनों को गले लगाकर, उनसे लिपटकर और आँसुओं के माध्यम से व्यक्त करती है।

नन्दा देवी राजजात का यह क्षण भी ठीक उसी अनुभूति को जीवंत कर देता है।

देवी को अत्यंत कठिनाई से संभालते हुए आगे बढ़ाया जाता है। इसके पश्चात राजजात *लाटू धार* की ओर प्रस्थान करती है। यहाँ लाटू देवता का एक छोटा सा मंदिर स्थित है। इसी स्थान से छतोली *मंडार के वृक्ष* की ओर तीव्र वेग से दौड़ पड़ती है। यह मार्ग चट्टानों से भरा हुआ है। केवल देखने मात्र से ही ऐसा प्रतीत होता है मानो ये शिलाखंड अभी टूटकर गिर पड़ेंगे, किंतु माँ नन्दा देवी की कृपा से सब कुछ सुरक्षित बना रहता है।

मंडार वृक्ष के समीप लाटू देवता माँ को लेने आए होते हैं। यहीं लाटू और छतोलियों का मिलन होता है। इस पवित्र वृक्ष से जल की बूँदें टपकती हैं। लोककथाओं के अनुसार, एक बार कठिन चढ़ाई के पश्चात माँ नन्दा देवी को प्यास लगी थी। उन्होंने इसी मंडार वृक्ष के नीचे कुछ समय विश्राम किया था। माँ की प्यास बुझाने हेतु इस वृक्ष ने अपने पत्तों से दूध की वर्षा की थी। तभी से प्रत्येक राजजात में माँ नन्दा देवी यहाँ अवश्य ठहरती हैं। किंतु कलियुग के प्रभाववश अब इस वृक्ष से दूध के स्थान पर जल की बूँदें टपकती हैं।

मंडार वृक्ष के पास *बारह थानों* की छतोलियाँ एकत्र होती हैं। उत्तराखण्ड में थान उस स्थान को कहा जाता है, जहाँ कोई देवी अथवा देवता विराजमान होते हैं। इन छतोलियों में रतूड़ा, खण्डूड़ा, चुलाकोट, थापली आदि गाँवों की छतोलियाँ सम्मिलित रहती हैं।

इसके पश्चात राजजात *देऊ मंदिर* की ओर अग्रसर होती है, जिसे कोटी गाँव का नन्दा मंदिर भी कहा जाता है। खेतों को फाँदते हुए यात्रा मंदिर तक पहुँचती है।

इस दृश्य से मुझे उस समय की एक घटना स्मरण हो आती है। इसी प्रकार जब देवता खेतों को पार करते हुए मंदिर की ओर बढ़ रहे थे, तब मेरे पूज्य पतिदेव मुझे और बच्चों को पीछे छोड़ते हुए खेत-दर-खेत छलाँग लगाकर आगे निकल गए थे। बच्चें उस समय रो पडे थे, क्योंकि इतनी भीड़ में हम उनसे बिछुड़ गए थे। आज भी मुझे स्पष्ट स्मरण है कि वे सीढ़ीनुमा खेतों को एक ही छलाँग में पार कर रहे थे, क्योंकि उस क्षण उन पर हमारी

कुलदेवी का अवतरण हो चुका था।

देऊ मंदिर में *बगोली का लाटू* लेने आया होता है। यहाँ से आगे राजजात की अगवानी बगोली का लाटू ही करता है। उसी दिन रात्रि विश्राम *कोटी गाँव* में होता है, जहाँ प्रत्येक पड़ाव की भाँति पूरी रात पूजा-जागरण चलता है।

दिनांक *27 अगस्त 2000* को नन्दा देवी राजजात कोटी गाँव से आगे के लिए प्रस्थान करती है। कुछ दूरी तक कोटी का लाटू साथ चलता है और तत्पश्चात *जीतू बगडवाल मंदिर* से वापस लौट जाता है। यह दृश्य अत्यंत भावविह्वल कर देने वाला होता है। उसी समय बगोली का लाटू आगे बढ़कर आश्वस्त करता है कि वह माँ को कैलाश तक छोड़ने जाएगा।

इस दृश्य को देखकर अनेक श्रद्धालुओं की आँखें नम हो जाती हैं। यह प्रसंग ठीक वैसा ही प्रतीत होता है, जैसे किसी बहन के साथ एक भाई पारिवारिक दायित्वों के कारण आगे नहीं जा पाता और दूसरा भाई उसे आश्वासन देता है कि वह उसके साथ अंत तक जाएगा। ऐसा लगता है मानो वास्तव में किसी बेटी की विदाई हो रही हो।

आगे मार्ग में *घतोडा गाँव* आता है। यहाँ देवी-गणों का युद्ध विशेष रूप से दर्शाया जाता है। लोकमान्यता है कि एक बार माँ नन्दा देवी के कैलाश गमन के समय राक्षसों ने यहाँ उनका मार्ग रोक लिया था, तब माँ के गणों ने युद्ध कर उनका संहार किया था। इसी कथा को नाट्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसे देखने के लिए भारी जनसमूह एकत्र होता है।

युद्ध समाप्त होते ही राजजात आगे बढ़ती है और मार्ग उत्साहपूर्ण वातावरण से गूँज उठता है।

इसके पश्चात *बमयाला गाँव* के लोग मार्ग में आकर भेंट अर्पित करते हैं और जागर गाते हुए अगले गाँव तक राजजात के साथ चलते हैं। इसी प्रकार अनेक गाँवों के लोग अपनी-अपनी श्रद्धा के साथ यात्रा में सहभागी बनते जाते हैं।

आगे चलकर *छेकुड़ा गाँव* आता है, जहाँ ढोल-दमाऊ की गूंज के साथ श्रद्धालु मार्ग में खड़े रहते हैं। कुछ दूरी पर एक मंदिर आता है, जहाँ पूजा-अर्चना होती है और कुछ छतोलियों का पुनः मिलन होता है। इसके पश्चात यात्रा *मानोडा गाँव* पहुँचती है, जहाँ देवी का अत्यंत भव्य और उल्लासपूर्ण स्वागत किया जाता है।

मानोडा के बाद राजजात *भगोती गाँव* में प्रवेश करती है। यहाँ भी छतोलियों का मिलन होता है और रात्रि विश्राम यहीं किया जाता है। पूरी रात जागरण चलता रहता है।

दिनांक *28 अगस्त 2000* को नन्दा देवी राजजात भगोती से *कुलसारी गाँव* के लिए प्रस्थान करती है।

कुछ दूरी पर *क्योर गधेरा* आता है। यहाँ मार्ग को लेकर मतभेद उत्पन्न हो जाता है। इसी समय हमारी कुलदेवी *माँ कालिंका* अपने पशुवा पर प्रकट होकर सही मार्ग का निर्देश देती हैं। कुछ लोग खाडू के मार्ग का समर्थन करते हैं, किंतु देवी अपने निर्णय पर अडिग रहती हैं।

जो लोग देवी द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हैं, वही सही सिद्ध होता है। थोड़ी ही दूरी पर सामने से आती छतोलियाँ देखकर विरोध करने वाले भी स्तब्ध रह जाते हैं और देवी-शक्ति पर उनका विश्वास और अधिक दृढ़ हो जाता है।

इसके पश्चात राजजात *कैली बगवान* (केलों का बगीचा) पहुँचती है। लोगों को यह अनुमान था कि इस बार भी देवी इन बगानों में नहीं जाएँगी, क्योंकि खाडू इस मार्ग से नहीं गया था। पिछली राजजात 1987 में भी ऐसा ही हुआ था। किंतु इस बार एक अद्भुत दृश्य उपस्थित हुआ—खाडू भले ही इस मार्ग से न गया हो, परन्तु देवी स्वयं इन बगानों में पहुँचीं। यह देखकर समस्त श्रद्धालु विस्मित रह गए और जोर से देवी की जयकार करने लगे।

यहीं समीप *क्योर गधेरा* स्थित है, जहाँ से माँ नन्दा देवी के ससुराल पक्ष का क्षेत्र आरंभ माना जाता है। यहाँ देवी को अत्यंत कठिनाई से संभालकर गधेरा पार कराया जाता है। दोनों ओर भारी भीड़ एकत्र रहती है, जिससे मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। स्थिति को नियंत्रित करने हेतु पुलिस बल, राजजात समिति के सदस्य तथा स्वयंसेवक अथक प्रयास करते हैं।

गधेरा पार करने के पश्चात राजजात मुख्य सड़क पर पहुँचती है। यहाँ पहले से विशाल जनसमूह उपस्थित रहता है। कुछ दूरी आगे पूजा-अर्चना होती है, भेंट अर्पित की जाती है और कई छतोलियाँ यहाँ भी मिलती हैं। कुछ छतोलियाँ स्वयं को ससुराल पक्ष की बताती हैं। यहाँ एक लाटू की छतोली भी सम्मिलित रहती है, जिसे नैणी से जुड़ा हुआ माना जाता है।

ये अपनी छंतोली आगे लगाते है, हमारे बारह थान वालों ने मुझसे स्पष्ट शब्दों में कहा कि संबंधित लोगों को पीछे किया जाए। मैंने स्वयं दो बार उनसे संवाद कर स्थिति को शांत करने का प्रयास किया, किंतु वे मानने को तैयार नहीं हुए और बात विवाद तक पहुँच गई। राजगुरु नौटियाल ब्राह्मणों ने भी उन्हें समझाने का भरसक प्रयास किया, परंतु वहाँ भी सफलता नहीं मिली। जब स्थिति असहनीय हो गई, तो मुझसे रहा नहीं गया। मैंने तत्काल

श्री राकेश कुंवर से संपर्क कर समस्त घटना विस्तार से उनके समक्ष रखी।

आपसी विचार-विमर्श के पश्चात यह निर्णय लिया गया कि उनकी छतोली के पीछे खाड़ू को लगा दिया जाए। जैसे ही यह व्यवस्था लागू हुई, उन्हें स्वयं अपनी भूल का बोध हो गया और वे बिना किसी अतिरिक्त विवाद के छतोली की पंक्ति में पीछे सम्मिलित हो गए। इस निर्णय के बाद स्थिति स्वतः शांत हो गई और यात्रा पुनः व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ चली।

इस क्षेत्र में सड़क कई स्थानों पर टूटी-फूटी थी, किंतु इसके बावजूद भीड़ कम होने का नाम नहीं ले रही थी। धीरे-धीरे नन्दा देवी राजजात का आगमन *कुलसारी गाँव* में हुआ। यहाँ रात्रि विश्राम सड़क से नीचे स्थित *माँ कालिका मंदिर* में किया गया। यह मंदिर अत्यंत सुंदर एवं शक्तिसंपन्न है, जहाँ काली यंत्र प्रतिष्ठित है। यह पड़ाव विशेष महत्व रखता है, क्योंकि अमावस्या की रात्रि में यहाँ राजगुरुओं द्वारा काली यंत्र की विशेष पूजा संपन्न की जाती है। पूर्वकाल में इस पूजा में बलि प्रथा प्रचलित थी, किंतु अब नौटियाल ब्राह्मणों द्वारा इसे समाप्त कर पूजा बिना बलि के ही संपन्न की जाती है।

कुलसारी में भी पूरी रात्रि पूजा-जागरण चलता रहा। श्रद्धालुओं के ठहराव हेतु अनेक टेंट लगाए गए थे, परंतु भीड़ अत्यधिक थी। जिस ओर हमारा समूह ठहरा था, वहाँ दो बार साँप निकल आने से अफरा-तफरी मच गई। कुछ लोग भयभीत हो गए, तो कुछ ने इसे देवी की लीला मानकर शांति बनाए रखी। रात्रि लगभग दस-ग्यारह बजे के आसपास तेज वर्षा आरंभ हो गई, जो प्रातःकाल तक निरंतर होती रही।

भय और वर्षा के कारण अनेक लोग अपने टेंट छोड़कर घरों के आगे शरण लेने लगे। हमारा टेंट भी टूट गया और अधिकांश लोग वहाँ से चले गए। अंततः केवल मैं, मेरा छोटा भाई और एक अन्य व्यक्ति—हम तीनों ही बरसाती के नीचे बैठे रहे। प्रातःकाल स्नान आदि से निवृत्त होकर हम पूजा के लिए तैयार हुए।

प्रातः लगभग आठ बजे वर्षा थमी। जब मैं मंदिर में पूजा हेतु पहुँचा, तो वहाँ अत्यधिक भीड़ थी। काफी प्रयास के बाद भी जब स्थिति नियंत्रित नहीं हुई, तब पुलिस की सहायता लेनी पड़ी। इसके पश्चात विधिवत पूजा संपन्न हो सकी। कहा जाता है कि उसी रात्रि देवी के संकेत से यहाँ तीन उग्रवादी पकड़े गए थे।

पूजा के उपरांत नन्दा देवी राजजात ने कुलसारी से आगे की यात्रा प्रारंभ की।

दिनांक: 29 अगस्त 2000

इस दिन नन्दा देवी राजजात कुलसारी से *चेपडियूं* के लिए प्रस्थान करती है। मार्ग में *थराली* पड़ता है, जहाँ एक विशाल मैदान में पूजा-अर्चना संपन्न होती है और विभिन्न छतोलियों का मिलन भी यहीं होता है। इसके पश्चात यात्रा आगे बढ़ती है और रात्रि विश्राम चेपडियूं में होता है।

इसी दिन *कुरुड की देवी* भी यहाँ पधारती हैं। इस पड़ाव पर *भोकदार बलवंत सिंह* का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। उन्होंने यात्रियों को हर प्रकार से सहयोग प्रदान किया तथा कुछ प्राचीन दस्तावेज भी दिखाए, जिनमें एक संवत 2008 का था। प्रत्येक विषय पर संवाद हुआ और हर संवाद में उनका सहयोग सराहनीय रहा। भोकदार जी ने स्वयं छतोली वालों के लिए भोजन की व्यवस्था की।

नदी के पार स्थित *त्रिकोट गाँव* में भी सीरी वालों द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया। चेपडियूं में राजछतोली वालों का भव्य स्वागत एवं आतिथ्य किया गया।

दिनांक: 30 अगस्त 2000

इस दिन नन्दा देवी राजजात चेपडियूं से प्रस्थान कर *नंदकेसरी* की ओर अग्रसर होती है। नंदकेसरी में देवी का एक प्राचीन मंदिर स्थित है, जो श्रद्धा का प्रमुख केंद्र है। रात्रि विश्राम यहीं किया जाता है। नंदकेसरी मंदिर में कुरुड की देवी ठहरती हैं, जबकि विद्यालय परिसर में कुमाऊँ और गढ़वाल की देवियाँ विराजमान होती हैं।

सबसे बडी खुशी यह कि लगभग *पचहत्तर वर्षों* के अंतराल के पश्चात कुमाऊँ की देवी जात में आयी। यह दृश्य अत्यंत दुर्लभ और भावविह्वल कर देने वाला था, जिसे देखने के लिए भारी जनसमूह एकत्र हुआ।

अगली सुबह, *31 अगस्त 2000*, को कुरुड की देवी से पुनः मिलन होता है। यह पड़ाव अस्थायी माना गया है और भविष्य में इसे स्थायी रूप नहीं दिया जाएगा। यहाँ से आगे की यात्रा हेतु एक विशेष व्यवस्था निर्धारित की गई, जिसे आने वाली पीढ़ियों के लिए नियम स्वरूप लिखा गया।

कुमाऊँ और कुरुड की देवियों के मुख्य छतोली में मिलने के पश्चात सबसे पहले नौटी वाला चौंसिंगा खाडू आगे चलेगा, उसके बाद बगोली लाटू (बाण तक)। बाण से आगे बाण का लाटू चौंसिंगे खाडू के पीछे, फिर बगोली लाटू, उसके पश्चात कुरुड की डोली, फिर राजछतोली, उसके बाद अल्मोड़ा देवी, खंडूरा की छतोली और अंत में अन्य छतोलियाँ चलेंगी।

इसी पड़ाव पर सतपाल महाराज द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया, यहां छंतोली वालो की भोजन की व्यवस्थता अलग से की गयी थी।

दिनांक: 31 अगस्त 2000

नन्दा देवी राजजात नंदकेसरी से प्रस्थान कर *फल्दियागांव* की ओर बढ़ती है। मार्ग में सेरा (खेत) क्षेत्र में स्थित एक मंदिर पड़ता है। किंवदंती है कि एक बार देवी असुरों से बचने के लिए गेहूँ की फसल में छिप गई थीं। जब असुर वहाँ पहुँचे, तो फसल हिलने लगी और देवी का पता चल गया। इससे क्रोधित होकर देवी ने उन फसलों को श्राप दे दिया, और तभी से वहाँ गेहूँ की बालियाँ नहीं लगतीं—केवल हरियाली ही रहती है। इन खेतों को *पूर्णा सेरा* कहा जाता है।

अनेक गाँवों से गुजरते हुए यात्रा रात्रि विश्राम के लिए फल्दियागांव पहुँचती है, जहाँ व्यवहार में कुछ परिवर्तन और कठिनाइयाँ अनुभव की जाती हैं।

दिनांक: 01 सितंबर 2000

इस दिन नन्दा देवी राजजात फल्दियागांव से प्रस्थान कर *मुंदोली* की ओर चल पड़ती है। मार्ग में *पीलफाड़ा मंदिर* में पूजा-अर्चना होती है। यहाँ एक बड़ा और एक छोटा मंदिर तथा एक विशाल वृक्ष स्थित है, जिसके चारों ओर चौंरा (दिवाल) बना है, जहाँ सभी छतोली वाले बैठते हैं। यहीं सभी ने चाय-पानी किया।

इसके पश्चात मार्ग पुनः अलग-अलग हो जाते हैं। कुरुड की देवी प्रत्येक घर पर रुकती थी जिससे हमारी बारह थान वाले अलग हो जाते है, क्योंकि देवी पहले भी कह चुकी थी कि रथ अलग-अलग हो गये है आज भी यहीं कहा फिर हम लोग कुरुड की देवी से पहले ही चल पडे। पीलफाडा में बैठे रहे, चाय-पानी पी, फिर यहां से दूबारा अलग-अलग रास्ते पर चल दिये। कुरुड की देवी गाँवों के रास्ते आगे बढ़ती हैं, जबकि हम सड़क मार्ग से बगरिगाड़ होते हुए मुंदोली पहुँचते हैं, जहाँ हम पहले ही पहुँच चुके होते हैं।

नंदा देवी राजजात यात्रा : मुंदोली से नौटी तक का समापन चरण

(02 सितम्बर 2000 – 09 सितम्बर 2000)

मुंदोली पहुँचने के उपरांत कुरुड की देवी कुछ विलंब से वहाँ पहुँचीं। जब तक कुरुड की देवी का आगमन नहीं हुआ, तब तक हम सभी ग्राम के पंचायती भवन में ठहरे रहे। जैसे ही देवी का आगमन हुआ, समस्त ग्राम में पुनः धार्मिक चेतना और उत्साह का संचार हो गया। उसी रात्रि विश्राम के पश्चात, यहीं से मैं अपने गृह की ओर प्रस्थान कर गया। यह क्षण मेरे लिए यात्रा के एक भावनात्मक विराम जैसा था, जहाँ आस्था, कर्तव्य और थकान—तीनों का

एक साथ अनुभव हुआ।

02 सितम्बर 2000: मुंदोली से वाण तक

मुंदोली से प्रस्थान कर नन्दा देवी राजजात वाण की ओर अग्रसर होती है। मार्ग में *लोहाजंग, काच्चीबगड़* में विधिवत पूजा-अर्चना संपन्न होती है। जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ती है, श्रद्धा और आस्था का स्वर और अधिक प्रबल होता जाता है।

वाण पहुँचने पर अनेक देवी-देवताओं की छंतोलियों का भव्य मिलन होता है। यहीं से *वाण का लाटू* राजजात की अगवानी करता है, जिसे इस क्षेत्र की धार्मिक परंपरा में विशेष महत्व प्राप्त है।

03 सितम्बर 2000: वाण से गरोली पातल

वाण से प्रस्थान कर राजजात *रिणकीघाट* की ओर बढ़ती है। मार्ग में *कैलगंगा* में विधिवत पूजा सम्पन्न होती है। इसके पश्चात यात्रा *गरोली पातल* पहुँचती है, जहाँ रात्रि विश्राम किया जाता है। पर्वतीय शांति, शीतल वायु और श्रद्धालुओं का अनुशासन इस पड़ाव को विशेष आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करता है।

04 सितम्बर 2000: गरोली पातल से पातर नचौणियां*

इस दिन राजजात *वेदनीकुंड* पहुँचती है, जहाँ विशेष पूजा तथा *पिंड तर्पण* किया जाता है। मान्यता है कि वेदनीकुंड में कुरुड की नंदा देवी प्रतिवर्ष आती हैं। इसके पश्चात यात्रा *पातर नचौणियां* की ओर बढ़ती है।

मार्ग में कैलवा विनायक में सर्वप्रथम भगवान गणेश की विधिवत पूजा-अर्चना की जाती है। इसके पश्चात तातड़ा देवता का पवित्र मिलन होता है, जो हिमालयी अंचल की लोकदेव परंपरा को सजीव रूप में प्रस्तुत करता है। यह स्थल आस्था, परंपरा और लोकविश्वास का अनुपम संगम है, जहाँ श्रद्धालु देवताओं की उपस्थिति को अपने अंतःकरण में अनुभव करते हैं।

पातर नचौणियां से जुड़ी एक मार्मिक और भयावह किवदंती जनमानस में प्रचलित है। कहा जाता है कि एक समय गढ़वाल के एक राजा ने देवी के प्रति उपहास भाव रखते हुए इसी स्थान पर अपनी सभा सजाई और अपने मनोरंजन हेतु दासियों से नृत्य करवाया। यह देवी नंदा को अत्यंत अप्रिय लगा। देवी के क्रोध का परिणाम इतना भयानक हुआ कि उस सभा में उपस्थित सभी की मृत्यु हो गई। इसी घटना के कारण इस स्थान का नाम पातर नचौणियां पड़ा। कहा जाता है कि उन मृतकों के अस्थि-अवशेष आज भी रूपकुंड में देखे जा सकते हैं, जो इस कथा को रहस्यमय और सजीव बनाते हैं।

05 सितम्बर 2000 : पातर नचौणियां से शिलासमुद्र

इस दिन राजजात यात्रा रूपकुंड पहुँचती है, जहाँ विधि-विधान से पूजा सम्पन्न की जाती है। रूपकुंड केवल एक प्राकृतिक सरोवर नहीं, बल्कि आस्था, रहस्य और लोककथाओं से जुड़ा एक पवित्र स्थल है।

रूपकुंड के विषय में जनमानस में यह कथा प्रचलित है कि जब देवी नंदा को कैलाश पर्वत समीप दिखाई दिया, तो इतनी लंबी और कठिन यात्रा के उपरांत उन्होंने स्नान कर स्वयं को संवारने की इच्छा प्रकट की। तब देवी ने इसी कुंड में स्नान किया और सज-संवरकर अपने रूप को इसी जल में निहारा। तभी से इस कुंड का नाम रूपकुंड प्रसिद्ध हुआ।

रूपकुंड से आगे यात्रा ज्यूरागली धार की ओर बढ़ती है, जिसकी ऊँचाई लगभग *17,500 फीट* है। इस दुर्गम दर्रे को पार करना केवल शारीरिक सामर्थ्य की ही नहीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता, आस्था और धैर्य की भी कठोर परीक्षा लेता है। अंततः इस कठिन चरण को पार कर राजजात शिलासमुद्र पहुँचती है, जहाँ हिमालय की विराट शांति और दिव्यता श्रद्धालुओं को एक अलौकिक अनुभूति से भर देती है।

06 सितम्बर 2000: शिलासमुद्र से चंदनियाघाट*

शिलासमुद्र से प्रस्थान कर *घी थोपिया* में शिला पर घी अर्पित किया जाता है—यह परंपरा आस्था और प्रतीकात्मक श्रद्धा का सजीव उदाहरण है। इसके पश्चात *होमकुंड* में पवित्र राजछंतोली एवं अन्य मायके क्षेत्र की छंतोलियों का विसर्जन किया जाता है।

लगभग प्रातः 11:30 बजे विधिवत पूजा सम्पन्न होती है। यहीं *चौंसिंगिया खाडूं* की विदाई होती है, यज्ञ संपन्न होता है और प्रसाद वितरण किया जाता है। इसके उपरांत यात्रा *चंदनियाघाट* की ओर लौटती है।

07 सितम्बर 2000: चंदनियाघाट से सुतोल*

चंदनियाघाट से प्रस्थान कर नन्दा देवी राजजात यात्रा *सुतोल* की ओर बढ़ती है। यह मार्ग हिमालय की उस अनुपम भव्यता से होकर गुजरता है, जहाँ ऊँचे बुग्याल, स्वच्छ नीला आकाश और शीतल पवन यात्रियों के मन में अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार कर देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति स्वयं माँ नन्दा देवी की विदाई में सहभागी बन गई हो।

08 सितम्बर 2000 : सुतोल से आगमन घाट*

सुतोल से प्रस्थान कर नन्दा देवी राजजात *आगमन घाट* की ओर अग्रसर होती है।

09 सितम्बर 2000 : घाट से नोटी

दिनांक 09 सितम्बर 2000 को माँ नन्दा राजजात घाट से प्रस्थान कर नंदप्रयाग पहुँचती है। नंदप्रयाग से यात्रा लंगासू, लंगासू से कर्णप्रयाग पहुँचती है। कर्णप्रयाग में उमा मंदिर में परंपरानुसार डियूंडी पुजारियों द्वारा पूजा सम्पन्न होती है तथा सुफल प्रदान किया जाता है। इसी स्थल से सामान्यतः डियूंडी ब्राह्मणों को विदा किया जाता है, किंतु इस राजजात में ऐसा नहीं हो पाया। इस बार कुँवर एवं राजगुरुओं द्वारा नन्दा देवी के पुजारियों को कार्यक्रम की स्पष्ट जानकारी न दिए जाने के कारण यह परंपरा पूर्ण नहीं हो सकी।

कर्णप्रयाग से यात्रा ईडाबधाणी पहुँचती है, जहाँ प्रसादी वितरण किया जाता है। इसके पश्चात ईडाबधाणी से यात्रा नोटी की ओर अग्रसर होती है।

नोट:

होमकुण्ड में डियूंडी पुजारी तथा कोटियालों ने श्री राकेश कुँवर से कर्णप्रयाग में पूजा एवं सुफल के विषय में जानकारी प्राप्त की। इस पर कुँवर जी ने बताया कि अब कर्णप्रयाग में कोई कार्यक्रम नहीं होगा और समस्त कार्य सीधे नोटी में ही सम्पन्न किया जाएगा, मार्ग में कोई अन्य कार्यक्रम निर्धारित नहीं है। इस सूचना के पश्चात डियूंडी एवं कोटियाल होमकुण्ड में पूजा सम्पन्न कर निरंतर रात-दिन चलते हुए सुतोल पहुँचे। इस प्रकार 09 सितम्बर 2000 के स्थान पर वे 08 सितम्बर 2000 को ही घर पहुँच गए।

दिनांक 11.09.2000 (सोमवार) को देऊ मंदिर में हवन एवं प्रसादी वितरण सम्पन्न हुआ।

****

समापन और भावनात्मक विराम

आगमन घाट में पहुंचने के साथ ही नन्दा देवी राजजात औपचारिक रूप से अपने समापन की ओर पहुँचती है। यात्रा भले ही पूर्ण हो जाती है, किंतु इसके अनुभव श्रद्धालुओं के हृदय में सदैव के लिए अंकित हो जाते हैं।

यह राजजात केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं है, बल्कि यह श्रद्धा, धैर्य, साहस और समर्पण की सामूहिक साधना है। इस यात्रा में सहभागी प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर कुछ न कुछ परिवर्तित हुआ हुआ लौटता है—कोई विश्वास के साथ, कोई शांति के साथ, तो कोई आत्मिक दृढ़ता के साथ।

मेरे पूज्य पति स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद डियूंडी जी के लिए नन्दा देवी राजजात 2000 एक दिव्य अनुभव था, जिसने उनके जीवन को आध्यात्मिक दृष्टि से समृद्ध किया। उनकी डायरी में संचित ये अनुभव केवल व्यक्तिगत स्मृतियाँ नहीं थे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए आस्था और लोकसंस्कृति की अमूल्य धरोहर थे। उन्हीं अनुभवों को शब्दों का रूप देकर यह पुस्तक आज पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

अंततः, नन्दा देवी राजजात एक यात्रा मात्र नहीं, बल्कि आस्था और आत्मिक अनुभूति का महासंगम है—जो मनुष्य को उसकी जड़ों, उसकी संस्कृति और उसकी श्रद्धा से पुनः जोड़ देती है।

✦ अंतिम निवेदन एवं धन्यवाद ✦

इस पुस्तक के माध्यम से जो शब्द आपके हाथों तक पहुँचे हैं, वे केवल एक यात्रा-वृत्तांत नहीं, बल्कि एक भक्त हृदय में संचित उन भावनाओं की अभिव्यक्ति हैं, जिन्हें समय ने सहेज कर रखा था। यह पुस्तक मेरे पूज्य पति *स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद डियूंडी जी* की उस एकमात्र नन्दा देवी राजजात यात्रा की स्मृतियों का संकलन है, जिसे उन्होंने अपने जीवन के सबसे पवित्र और आत्मिक अनुभवों में स्थान दिया।

मैं स्वयं उस राजजात की सहभागी नहीं रही, परंतु वर्षों तक उनकी डायरी के पन्नों में अंकित उन अनुभवों को पढ़ते-पढ़ते ऐसा अनुभव हुआ, मानो मैं भी प्रत्येक पड़ाव, प्रत्येक कठिन मार्ग और प्रत्येक भावनात्मक क्षण की साक्षी रही हूँ। उन्हीं लिखित अनुभूतियों को ज्यों-का-त्यों सहेजते हुए, बिना किसी अलंकरण या परिवर्तन के, इस पुस्तक का रूप देना मेरा उद्देश्य रहा है।

इस कार्य के दौरान मेरा प्रयास केवल इतना रहा कि मेरे पति की श्रद्धा, उनकी भावनाएँ और उनकी आस्था शब्दों में जीवित रह सकें। यह पुस्तक किसी विद्वतापूर्ण विश्लेषण या उपदेश के लिए नहीं, बल्कि एक साधारण भक्त के हृदय में बसे विश्वास को साझा करने के लिए है।

यदि इस पुस्तक के पठन से पाठकों के मन में माँ नन्दा देवी के प्रति श्रद्धा और गहरी होती है, यदि किसी को इसमें अपनी आस्था की झलक मिलती है, या यदि यह पुस्तक किसी के मन को शांति प्रदान कर पाती है—तो मैं अपने प्रयास को सार्थक मानूँगी।

इस पुस्तक में यदि कोई त्रुटि, भाषा की कमी या अभिव्यक्ति की अपूर्णता दृष्टिगोचर हो, तो उसे मेरी सीमा और अल्प सामर्थ्य समझते हुए क्षमा किया जाए। मेरे लिए यह एक साहित्यिक प्रयास से अधिक, एक भावनात्मक और श्रद्धापूर्ण कर्तव्य रहा है।

अंत में, मैं उन सभी पाठकों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को पढ़ने के लिए समय और भाव दिया। साथ ही, मैं उन समस्त दृश्य और अदृश्य शक्तियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ, जिनकी कृपा से यह कार्य पूर्ण हो सका।

माँ नन्दा देवी से मेरी यही प्रार्थना है कि वे सभी पाठकों पर अपनी कृपा बनाए रखें, उन्हें शांति, श्रद्धा और सद्‌बुद्धि का मार्ग दिखाएँ।

— पुष्पा डियूंडी

पत्नी — स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद डियूंडी

न्यायिक अस्वीकरण (**Legal Disclaimer)**

इस पुस्तक में सम्मिलित सभी कथाएँ, वर्णन, लोकविश्वास, अनुभव एवं चित्र केवल *साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक अभिव्यक्ति* के उद्देश्य से प्रस्तुत किए गए हैं। इनमें प्रयुक्त चित्र एवं दृश्य-संदर्भ *प्रतीकात्मक एवं कल्पनात्मक* हैं, जिनका उद्देश्य पाठकों की कल्पना को सहारा देना मात्र है।

पुस्तक का कोई भी अंश किसी व्यक्ति, समुदाय, धर्म, जाति, संप्रदाय, देवता, लोकदेवता अथवा धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाने, अपमानित करने या भड़काने के उद्देश्य से नहीं लिखा गया है। यदि किसी पाठक को किसी अंश से असहमति या आहत होने की अनुभूति

होती है, तो वह पूर्णतः *अनजाने एवं अनिच्छित* है।

यह कृति भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त *अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता* के अंतर्गत, सद्भावना एवं श्रद्धा के साथ रचित है। लेखक एवं प्रकाशक किसी भी प्रकार की *दुराशयपूर्ण व्याख्या* के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे।

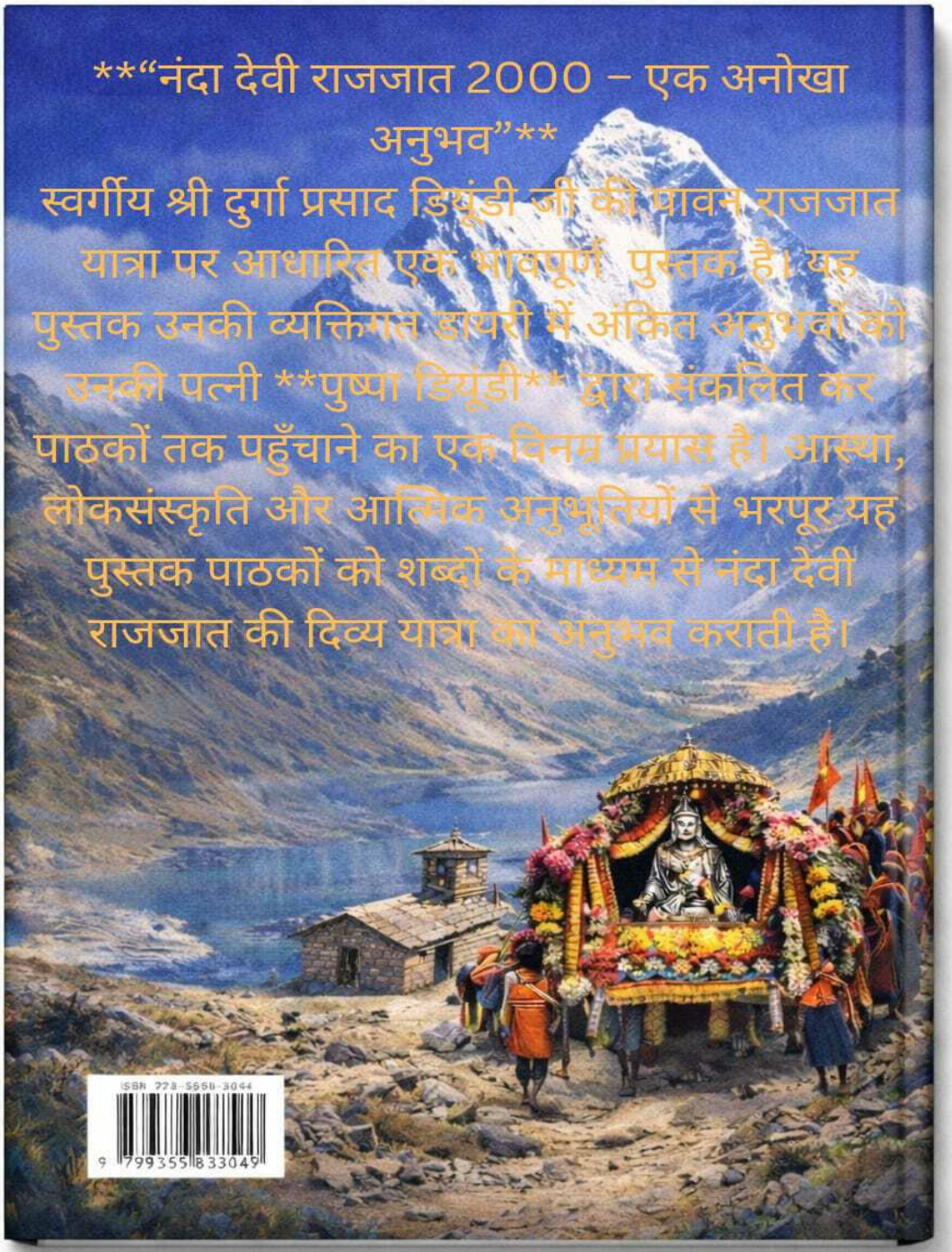
“नंदा देवी राजजात 2000 – एक अनोखा अनुभव”
स्वर्गीय श्री दुर्गा प्रसाद डिंडूंडी जी की पावन राजजात यात्रा पर आधारित एक भावपूर्ण पुस्तक है। यह पुस्तक उनकी व्यक्तिगत डायरी में अंकित अनुभवों को उनकी पत्नी **पुष्पा डिंडूंडी** द्वारा संकलित कर पाठकों तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है। आस्था, लोकसंस्कृति और आत्मिक अनुभूतियों से भरपूर यह पुस्तक पाठकों को शब्दों के माध्यम से नंदा देवी राजजात की दिव्य यात्रा का अनुभव कराती है।
ISBN 978-5558-3044
9 799355 833049